International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 50-51

प्रेमचन्द के उपन्यासों में विशम दाम्पत्य जीवन में नारी की स्थिति

सुमन
शोधार्थी मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

समाज की सबसे बड़ी इकाई परिवार है और परिवार के स्तम्भ हैं नारी और पुरुष। किन्तु विडम्बना यह है कि समाज में समान रूप से भागीदार होते हुए भी नारी उन मूलभूत अधिकारों से वंचित है जो पुरुष ने बलपूर्वक हथियाये हुए हैं। पुरुष नारी को अपने मनोरंजन और विलासिता की वस्तु समझ, उसके साथ उपेक्षा का व्यवहार करता है। परिणामस्वरूप नारी जीवन–भर सेवा, त्याग आदि आदर्शों के नाम पर पिसती रहती है, आत्मसम्मान और स्वावलम्बन का सुख अनुभव ही नहीं कर पाती। इन्हीं परिस्थितियों के कारण औरतों की चुप्पी सदियों और युगों से चली आ रही है। नारी भी व्यक्ति है, उसका भी अपना अलग वजूद है। क्या कभी किसी साहित्यकार ने इस ओर ध्यान दिया है ? लेकिन हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द सबसे पहले कथाकार है जो पाठकों के समक्ष नारी का सषक्त व्यक्तित्व प्रस्तुत करते हैं प्रेमचन्द गाँधी के विचारों से बहुत प्रभावित हुए, क्योंकि गाँधी जी नारी जागृति के सबसे बड़े पोशक थे। उनका कहना था ''स्त्री पुरूश की गुलाम नहीं है–वह अर्धांगिनी है, सहगामिनी है। उसको मित्र समझना चाहिए।''[1] इस प्रकार गाँधीवादी विचारों से प्रभावित होकर प्रेमचन्द ने कई उपन्यास लिखे जिसमें नारी के प्रति समाज में हो रहे ढेरों बुराइयों को प्रस्तुत किया है। इन बुराइयों में एक प्रमुख बुराई विशम दाम्पत्य जीवन की है। अपने आरम्भिक उपन्यास में ही प्रेमचन्द ने नारी की विशमता का चित्रण आरम्भ कर दिया था, जिसमें नारी की मूक आत्मा छटपटाती रहती है।

भारतीय वैवाहिक पद्धति के अनुसार पति–पत्नी के वैवाहिक जीवन में मेल ना होना विशम दाम्पत्य जीवन कहलाता है, और यह विशमता कई प्रकार की होती है। जैसे–कहीं पति–पत्नी के स्वभाव और विचारधारा में विशमता है तो, कहीं वय की दृष्टि से अनमेल है, और उसके भिन्न–भिन्न रूप और भिन्न–भिन्न कारण हैं। कहीं दहेज की समस्या के कारण फूल–सी कन्या को अधेड़ या वृद्ध आदमी से बाँध देने का दोश है, या अधेड़ दुहाजू से ब्याह देने की विशम परिस्थिति है, तो कहीं अशिक्षा और अन्ध–परम्परा से बाल–विवाह की कुरीति है। कहीं वृद्ध–विवाह की लालसा है, तो कहीं माँ–बाप पैसा लेकर लड़की को बूढ़े के हवाले कर देते हैं। हमारे समाज में विवाह एक ढकोसला बन गया है। रुपये–पैसे की दृष्टि से रिश्ते–नाते होते है। माता–पिता द्वारा की गई ऐसी षादियों के दुश्परिणाम से ज्यादातर प्रभावित लड़कियाँ ही होती है। अगर वह कुछ बोलने का साहस करती हैं तो उन्हें चुप करा दिया जाता है। अगर हम स्त्री–पुरुष की तुलना करें तो बचपन से ही समाज में पुरुष का महत्व स्त्री से ज्यादा होता है। हमारा समाज स्त्री–पुरुष में भेद करता है।

शादी–ब्याह में लड़के–लड़की की प्रकृति–रीति का मिलान करने की बजाए जब रुपये–पैसे की माप–जोख से ब्याह होगा तो विशम परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी ही और यही परिस्थिति प्रेमचन्द के 'वरदान' उपन्यास में उत्पन्न हुई है। जिसमें अमीर की लड़की बिरजन और गरीब का लड़का प्रताप से कैसे ब्याही जा सकती है ? चाहे दोनों का स्वाभाविक प्रेम 'लरिकाई को प्रेम' बनकर विकसित हुआ हो माँ–बाप अपनी मर्जी से ही शादी करते हैं, जिनकी शादी होनी है, उनकी इच्छा–अनिच्छा की कोई परवाह नहीं की जाती, बस हैसियत मिलाई जाती है और भावनाएँ कुचल दी जाती हैं। लेकिन वहीं प्रेमचन्द के दूसरे उपन्यास 'गोदान' में रायसाहब अमरपालसिंह अपने बेटे रुद्रपाल का विवाह भी अपनी प्रतिश्ठा और मर्यादा की दुहाई देकर राजा सूर्यप्रतापसिंह की लड़की से अपनी मर्जी के मुताबिक करना चाहते हैं, पर वह तो लड़का था–निडर, स्वच्छन्द विचारों का। इसी से बाप के झाँसे में न आया। इन दोनों तथ्यों से यह बात स्पश्ट हो जाती है कि जबरन लड़कियों को ही उनकी अपनी इच्छा के विपरीत वैवाहिक जीवन में झोंक दिया जाता है। अगर वह कुछ बोलती है तो षास्त्र, अनुषासन व समाज उस पर आक्रमण करके उसे खामोष कर देते हैं।

'प्रतिज्ञा' और 'मंगलसूत्र' में पति–पत्नी में स्वभाव और विचारों की विशमता दिखाए गए हैं। कमलाप्रसाद और सुमित्रा के वैवाहिक जीवन में विशमता इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि लड़के–लड़की की जन्म–कुण्डलियाँ ही माँ–बाप मिलाते हैं, दोनों की प्रकृति, शिक्षा–संस्कार के मिलान करने की उन्हें दृष्टि ही नहीं मिलती है। वे अपनी हैसियत मिलाते हैं और रुपये–पैसे पर रिश्ते–नाते होते हैं। सुमित्रा में नम्रता, विनय और दया की भावना है तो कमलाप्रसाद में घमण्ड, उच्छृंखलता और स्वार्थ की भावना है। दूसरी ओर 'मंगलसूत्र' में संतकुमार और पुश्पा के वैवाहिक जीवन में विशमता इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि संतकुमार पुश्पा पर अपना दबदबा बनाए रखना चाहता है। संतकुमार का कथन है कि– ''जो स्त्री पुरुष पर अवलम्बित है, उसे पुरुष की हुकूमत माननी पड़ेगी।''[2] किन्तु पुश्पा आत्माभिमानिनी एवं नारी की अस्मिता की पक्षधर है। उसे अपने पति द्वारा कही गई यह बातें बहुत ही अपमानजनक लगती है पर वह कहती है कि जब एक औरत अपने अधिकारों के लिए पुरुष से लड़ती है। उसकी बराबरी का दावा करती है तो उसे कठोर बातें सुनने के लिए तैयार रहना चाहिए।

पति–पत्नी में विचारों और स्वभाव की विशमता तो फिर भी परिस्थितियों से समझौता कर लेती है लेकिन वय और आकृति के अनमेल से जो विशमता उत्पन्न होती है, वह समझौते के लिए भी गुंजाइष नहीं छोड़ती है। 'सेवासदन' और 'निर्मला' दोनों में वय की विशमता का मूल कारण दहेज प्रथा है। दहेज की कुप्रथा के कारण ही सुमन के मामा उमानाथ और निर्मला की माता अपनी–अपनी कन्या के लिए योग्य वर प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं। जहाँ–कहीं खाते–पीते नवयुवक को ढूँढ़ा जाता है, वहीं दहेज की लम्बी–चौड़ी माँग हो जाती है।

'सेवासदन' में सुमन का विवाह अधेड़ अवस्था के एक कुरूप, निर्धन एवं दुहाजू गजाधरप्रसाद से होता है। सुमन के जीवन की विशम परिस्थितियाँ कैसे उसे वेश्या बना डालती है और यह सब होता है केवल धन के अभाव में, जिससे एक स्त्री की इतनी दुर्गति होती है।

निर्मला का विवाह उसके पिता, भुवनमोहन से तय कर चुके होते हैं लेकिन निर्मला के पिता की मृत्यु के पश्चात भुवनमोहन निर्मला से

शादी करने से इन्कार करता हुआ अपने पिता से कहता है – ''कहीं ऐसी जगह शादी करवाइए कि खूब रूपया मिले और न सही एक लाख का डौल तो हो।''[3] वह इसके लिए यहाँ तक तैयार है कि औरत चाहे कैसी भी हो– ''धन सारे ऐबों को छिपा देगा। मुझे वह गालियाँ भी सुनाए तो चूँ न करूँ। दुधारू गाय की लात किसे बुरी मालूम होती है ?''[4] इस पुरुष के ऐसे मनसूबों के कारण ही निर्मला का जीवन तबाह हो जाता है। विवष होकर, दहेज खोरों का मुंह न भर सकने के कारण निर्मला का विवाह 40 से भी ऊपर के एक दुहाजू सम्पन्न वकील तोताराम से होता है। वह अपने मन की सारी आकांक्षाओं को दबाकर अपना जीवन व्यतीत करती है। हर लड़की की ख्वाइष होती है कि उसका जीवन साथी सुन्दर हो हम उम्र हो पर निर्मला इन सब बातों से वंचित रहती है। वह पति का सम्मान करती है सेवा करती है लेकिन प्यार नहीं कर पाती।

'गबन' में तो नारी की और भी बदतर स्थिति उत्पन्न होती है। एक ओर विशम दाम्पत्य जीवन तो है ही, दूसरी ओर पति की मृत्यु के बाद उसके अधिकार भी छीन लिए जाते हैं। रतन का विवाह एक बूढ़े सम्पन्न वकील साहेब से होता है। युवती रतन अपने पति के धन से खेलकर ही अपने को सन्तुश्ट रखती है। जब रतन के पति की मृत्यु हो जाती है तो उसे वह जीवन जीने के लिए विवष हो जाना पड़ता है जो हर हिन्दू विधवा के भाग्य में बदा होता है। रतन असहाय हो जाती है। उसकी धन–सम्पत्ति वकील साहब के भतीजे द्वारा लूट ली जाती है। रतन बेसहारा, निर्धन, कंगाल बना दी जाती है। मणिभूशण (भतीजा) रतन से कहता है ''आपका इस घर पर और चाचा जी की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं। वह मेरी सम्पत्ति है। आप मुझसे केवल गुजारे का सवाल कर सकती हैं–सम्मिलित परिवार में विधवा का अपने पुरुष की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं होता।''[5] एक स्त्री के प्रति क्या यही सामाजिक नियम है ? क्या वो व्यक्ति नहीं है ? क्या जब तक किसी स्त्री का पति जीवित होता है तब तक ही उस स्त्री का जीवन होता है ? नारी जीवन की यह कैसी करुण परिस्थिति है।

'रंगभूमि' में राजा महेंद्रकुमार सिंह और उनकी पत्नी इन्दू में विचारों और स्वभाव की विशमता है। भैरों और सुभागी का जोड़ा भी विशम है, इस उपन्यास के दोनों ही पुरुष अपनी पत्नी पर अपना दबदबा बनाए रखना चाहते हैं बल्कि यह कहा जा सकता है कि यह दोनों पुरुष अपनी पत्नी से गाय की तरह व्यवहार चाहते हैं जहाँ इन पत्नी की कोई इच्छा–अनिच्छा ना हो केवल पति की ही इच्छा का पालन करें।

'कायाकल्प' में तो विशमता का सामन्तीय रुप उभर आया है। राजा विषालसिंह के लिए शादी विलास का एक साधन है। वह छः–छः षादियाँ करता है और प्रत्येक नारी को सूँघे हुए फूल की तरह फेंक देता है। यह नारी जीवन की कैसी करुण परिस्थिति है कैसी विवषता है; रोहिणी की दुखी आत्मा राजा से कहती है– ''आपने मेरे साथ कोई अन्याय नहीं किया। आपने वही किया, जो सभी पुरुष करते हैं।.....स्त्री कभी पुरुष का खिलौना है, कभी उनके पाँव की जूती।''[6]

'गोदान' में प्रेमचन्द ने विशम दाम्पत्य जीवन के कई चित्र प्रस्तुत किए हैं। खन्ना और गोविन्दी में नहीं पटती है। खन्ना धन–दौलत का मतवाला, लम्पट, रसिक, धन को ही सब कुछ समझने वाला, आडम्बर–प्रिय व्यक्ति है। लेकिन गोविन्दी सरल ह्रदय की भारतीय नारी है।

दिग्विजयसिंह और मीनाक्षी में भी नहीं पटती। दिग्विजयसिंह ऐय्याष और षराबी थे। एक दिन वह क्रोध में आकर हण्टर लिए दिग्विजयसिंह के बंगले पर पहुँची। षोहदे जमा थे और वेश्या का नाच हो रहा था जब उसने हण्टर उठाकर मारना षुरु किया तो लोग इधर–उधर भागने लगे।.....इतना मारा कि कुवँर साहब बेदम हो गए। मीनाक्षी हण्टर तान कर वेश्या पर जमाना ही चाहती थी कि वेश्या उसके पैरों पर गिर पड़ी... मीनाक्षी ने उसकी ओर घृणा से देखकर कहा– ''हाँ तू निरपराध है। जानती है न, मैं कौन हूँ ? चली जा। अब कभी यहाँ न आना। स्त्रियाँ भोग–विलास की चीजें हैं ही, तेरा कोई दोश नहीं।''[7] पुरुष की विलासवृत्ति का कैसा घिनौना रुप है ? यह पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था की त्रुटि ही है।

शहरों में यह विशमता पुरुष की लम्पटता और स्वभाव की उद्दण्डता के कारण उत्पन्न होती है, जिसके मूल में है धन–सम्पत्ति का दोश। गाँव में विशमता का कारण है विवषता। होरी की दषा दिन–दिन गिरती जा रही थी। मकान गया, बैल गए, खेती नहीं रही, अब जमीन से भी बेदखल होने वाला था तो वह विवष हाकर अपनी लड़की रुपा का ब्याह बूढ़े रामसेवक से कर देता है। लेकिन होरी का मन स्वयं को कचोटता रहता है कि उसने अपनी लड़की का विवाह नहीं सौदा किया है।

इन सभी उदाहरणों से यह स्पश्ट हो जाता है कि प्रेमचन्द के समय की स्त्री निडर साहसी हो या ना हो लेकिन आदर्षवादी व पतिव्रता तो वह जरुर ही हैं। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में विशम वैवाहिक जीवन में नारी की हर स्थिति को दर्षाया है। उनकी नारियाँ काल्पनिक कम और वास्तविक अधिक है। नारी की यह विशम वैवाहिक जीवन की स्थिति प्रेमचन्द के समय की ही नहीं है बल्कि यह समसामयिक भी है।

संदर्भ

1. गांधी विज्ञान दर्शन, संग्रहकर्ता श्री स्वामी रामकृश्ण जी, पृ. –109।
2. मंगलसूत्र : प्रेमचन्द, पृ.–17, प्रकाशन संस्थान 4268–इ/3, अंसारी रोड़, दरियागंज नई दिल्ली–2, सं.–2014।
3. निर्मला : प्रेमचन्द, पृ.–31, भारती भाशा प्रकाशन 5118/6, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली–32, प्र.सं.–1987।
4. वही।
5. गबन : प्रेमचन्द, पृ.–210, ज्ञानदीप प्रकाशन 3/689, महरौली, नई दिल्ली–30, सं.–2006।
6. कायाकल्प : प्रेमचन्द, पृ.–273, प्रकाशन संस्थान 4715/21, दयानन्द मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली–2, सं.–2012।
7. गोदान : प्रेमचन्द, पृ.–295, प्रकाषन संस्थान 4268–बी/3, अंसारी रोड़, दरियागंज नई दिल्ली–2 सं.–2014।